2.3 भरतीय कृषि की विशेषताएँ

भारतीय कृषि के महत्व के अध्ययन के बाद यह आवश्यक हो जाता है कि भारतीय कृषि की विशेषताओं का अध्ययन किया जाय। भारतीय कृषि की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

1. **जनताकी आजीविका का मुख्य साधन** (Important source of livelihood)—भारतीय कृषि की प्रमुख विशेषता है कि यह जनता की आजीविका का प्रमुख साधन है । 1981 की जनगणना के अनुसार कार्यशील जनसंख्या का 66.97% भाग कृषि से आजीविका प्राप्त करता है । जनसंख्या के इस भगा में 43.44% लोग कृषक हैं और 26.33% लोग मजदूर हैं ।

2. **भारतीय कृषि मानसून का जुआ है** (Gamble of monsoon)—भारतीय कृषि की एक विशेषता यह भी है कि यहाँ के किसान वर्षा पर निर्भर रहते हैं। अर्थात् वर्षा समय पर होती है तो कृषि-कार्य होता है और समय पर नहीं होती है तो कृषि-कार्य नहीं होता है। मानसून पर आश लगाकर रहना ही पड़त है ।

3. **कृषि जोतों का छोटा होना** (Predominance of small holdings)—भारत में कृषि का आकार अन्य देशों के मुकाबले छोटा हे। इसका कारण कृषि पर जनसंख्या का अधिक भारत है । भारत मे जोतों का औसतन आकार 6.57 एकड़ है जबकि न्यूजीलैंड में 400 एकड़, अमरीका में 215.8 एकड़ और ब्रिटेन में 66.5 एकड़ है ।

4. **कृषि उत्पादकता का निम्न स्तर** (Low level of productivity)—भारतीय कृषि की एक विशेषता यह भी है कि यहाँ उत्पादकता अन्य विकसित देशों के मुकाबले बहुत कम है। यह उत्पादकता दो आधारों पर मापी जा सकती है–प्रति एकड़ उत्पादकता और प्रति श्रमिक उत्पादकता। उदाहरण के लिए, भारत में एक हैक्टेयर भूमि में 1,650 किलो गेहूँ पैदा होता है, जबकि अमरीका में एक हैक्टेयर में 2,320 किलो औरम किसानों में 3,700 किलो गेहूँ पैदा होता है ।

5. **उत्पादन की परम्परागत तकनीक** (Traditional techniques of production)—भारत में कृषि कार्य परम्परागत तकनीक से किया जाता है। यद्यपि योजनाकाल में नवीन तकनीक का विकास हुआ है, लेकिन अभी भी भारतीय कृषि में हल-बैल और कुदाल-खुरपी की ही प्रधानता है ।

6. **कृषि में वर्ष भर रोजगार न मिलना** (Disguised and seasonal unemploymen)—भारत में कृषक और कृषक-मजदूर को वर्ष भर रोजगार नहं मिल पाता है। यहाँ मात्र 150 दिन से लेकर 270 दिन तक

Scanned with CamScanner

ही रोजगार मिलता है। इससे कृषि में काम करने वालों के बीच अर्ध और अदृश्य बेरोजगारी की स्थिति रहती है।

7. भारतीय कृषि श्रम प्रधान है (Labour intensive agriculture)—भारतीय कृषि श्रम प्रधान है। यहाँ पूँजी की कमी है। अतः कृषि में पूँजी का प्रयोग न होकर श्रम का ही प्रयोग अधिक होता है ।

8. खाद्यान्न फसलों को प्रमुखता (Predominance of foodgrain)—कृषि फसलों की दृष्टि में, भारतीय कृषि में खाद्यान्न फसलों की प्रमुखता रहती है। देश के कुल कृषि क्षेत्र के लगभग 75 प्रतिशत भाग में खाद्यान्न फसलों तथा 25 प्रतिशत भाग में व्यापारिक फसलों का उत्पादन किया जाता है ।

भारतीय कृषि की उपर्युक्त विशेषताओं के अध्ययन के पश्चात् यह आवश्यक हो जाता है कि भारतीय कृषि के पिछड़ापन का अध्ययन किया जाय, अर्थात् भारत में निम्न कृषि उत्पादकता के कौन-कौन से कारण हैं ? इसका अध्ययन किया जाय ।

Scanned with CamScanner